

दृष्टिकोण-परक बयान

अस्वास्थ्यप्रद खाद्य/पेय उत्पादों के पैकेट पर
सामने वाले हिस्से पर लेबलिंग (एफ.ओ.पी.एल.)

आवश्यक करने पर बल

सार्वजनिक स्वास्थ्य का संरक्षण करने वाले भारतीय संगठनों का
दृष्टिकोण-परक बयान



परिचय

भारत मोटापे, डायबिटीज (मधुमेह), कैंसर, हाईपरटेन्शन, हृदय रोगों, गुर्दे की बीमारियों और मानसिक स्वास्थ्य, गैर-संचारी रोगों (एन.सी.डी.) के बढ़ते सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट का सामना कर रहा है। यह अनुमान लगाया गया है कि हर साल लगभग 9 मिलियन की कुल मौतों में से गैर-संचारी रोगों से लगभग 5.8 मिलियन लोग मौत के शिकार हो जाते हैं, जो वार्षिक मौतों में लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा है।¹ व्यापक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण (सी.एन.एन.एस.) 2016 से पता चलता है कि 5-19 वर्षीय बच्चों में से आधे से अधिक बच्चे गैर-संचारी रोगों के बायोमार्कर दर्शाते हैं।²

इस बात के पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण हैं कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड अस्वास्थ्यप्रद खाद्य/पेय उत्पादों (यू.पी.एफ.) की बढ़ती खपत गैर-संचारी रोगों के उच्च जोखिम से जुड़ी हुई है और ये सभी मृत्यु का कारण बनते हैं।³ अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों की उच्च खपत (रोज़ाना > 4 सर्विंग्स) अलग से मृत्यु के सभी कारणों में अपेक्षाकृत 62 प्रतिशत ज्यादा खतरे से जुड़ी हुई थी।⁴ हाल ही में एक मेटा-विश्लेषण से पता चला है कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड अस्वास्थ्यप्रद खाद्य पदार्थों की कम खपत की तुलना में, उनकी उच्च खपत से मृत्यु जोखिम में 29 प्रतिशत की वृद्धि हुई।⁵ विश्व के जाने-माने विशेषज्ञ अस्वास्थ्यप्रद खाद्य वातावरण बनाने के लिए इन खाद्य उत्पादों पर चेतावनी के लेबल लगाना आवश्यक मानते हैं।⁶

हकीकत यह है कि भारत में अस्वास्थ्यप्रद खाद्य और पेय उत्पादों की खपत तेजी से बढ़ती जा रही है।⁷ इन औद्योगिक रूप से प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों में आम तौर पर चीनी, नमक की उच्च मात्रा या उच्च-वसा होती हैं, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। साथ ही, सबूत दर्शाते हैं कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड (अति-प्रसंस्करण) अपने आपमें पोषक तत्वों से अलग से लोगों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।⁸ वर्ल्ड हार्ट फेडरेशन के अनुसार, "कमज़ोर आहार दुनिया भर में किसी भी अन्य जोखिम कारक की तुलना में अधिक मौतों के लिए जिम्मेदार है और यह मोटापा, टाइप-2 डायबिटीज और हृदय रोग का एक प्रमुख कारण है।"⁹ इस सिलसिले में किए गए अध्ययन गुर्दे के कार्य में गिरावट के साथ संबंध दर्शाते हैं।¹⁰ जांच किए गए 43 अध्ययनों में से 37 की वर्णनात्मक समीक्षा में, अति-प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के आहार संबंधी जोखिम को वयस्कों में शरीर के अधिक वज़नी होने, मोटापे, कार्डियो-मेटाबोलिक खतरों, कैंसर, टाइप-2 डायबिटीज एवं हृदय संबंधी बीमारियों तथा वयस्कों एवं मृत्यु के सभी कारणों में चिड़चिड़ा आंत्र सिंड्रोम (इरीटेबल बाउल सिंड्रोम), डिप्रेसन (अवसाद), शरीर में कमज़ोरी संबंधी समस्याओं से जोड़ा गया था। कार्डियो-मेटाबोलिक जोखिम एवं अस्थमा बच्चों और किशोरों में सबसे आम थे।¹¹ आम तौर पर कई खाद्य उत्पादों में उपयोग की जाने वाली कृत्रिम मिठास (विशेष रूप से एस्पार्टेम और एसेसल्फ़ेम-के) कैंसर के बढ़ते जोखिम से जुड़ी होती है।¹²

इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स (आई.ए.पी.) के "फास्ट एंड जंक फूड्स, चीनी मिले मीठे पेय पदार्थ, फलों के रस और ऊर्जा पेय के बारे में दिशा-निर्देशों"¹³ में सभी अस्वास्थ्यप्रद खाद्य पदार्थों (यानी तैयार खाद्य पदार्थ, पौष्टिक रूप से अनुपयुक्त खाद्य पदार्थ, कैफीनयुक्त/रंगीन/कार्बोनेटेड खाद्य पदार्थ/पेय पदार्थ, और चीनी-मीठे पेय पदार्थ) के लिए एक नया संक्षिप्त नाम- 'JUNCS' खाद्य पदार्थों - का सुझाव दिया गया था। इन दिशा-निर्देशों में 'JUNCS' खाद्य पदार्थों की खपत को सीमित करने की सिफारिश की गई। अस्वास्थ्यप्रद खाद्य उत्पादों की खपत को कम करने के लिए नीति विकल्पों में पैकेट पर सामने वाले हिस्से पर लेबल लगाना (फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग, संक्षेप में एफ.ओ.पी.एल.), मार्केटिंग को प्रतिबंधित करना, ऊंचे टैक्स लगाना और स्कूली भोजन वातावरण में सुधार लाना शामिल हैं।

इस बयान में हम पैकेट पर सामने वाले हिस्से पर लेबल लगाने (फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग, संक्षेप में एफ.ओ.पी.एल.) ध्यान केंद्रित करेंगे, जिसका अर्थ है कि उपभोक्ता को मानवाधिकारों के साथ-साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी पहल के मामले में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।¹⁴ फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग

विशेष रूप से वांछित सार्वजनिक स्वास्थ्य के लक्ष्य पाने के लिए एक साधन के रूप में व्यवहारगत बदलाव संबंधी संदेश देने के डोमेन से उत्पन्न हुआ है। इस मामले में डब्ल्यू.एच.ओ. (पी.ए.एच.ओ., 2021) द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार उन खाद्य पदार्थों का कम उपभोग करना, जिनमें नमक, चीनी एवं उच्च वसा होती है, जिससे अधिक शारीरिक वजन और मोटापे तथा परिणामस्वरूप गैर-संचारी रोगों में कमी आएगी।¹⁵ फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग उपभोग के लिए खरीदे जाने वाले खाद्य पदार्थों के सार्वजनिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में उपभोक्ताओं को सूचित करने का एक आसान, सस्ता, व्यावहारिक और प्रभावशाली साधन है। वर्तमान में पोषक तत्वों के बारे में चेतावनी लेबल, रंग-कोडित ट्रेफिक लाइट्स, न्यूट्री-स्कोर, हेल्थ स्टार रेटिंग्स और डेली एलाउंस के लिए दिशा-निर्देश (जी.डी.ए.) प्रचलित हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि उपभोक्ता खाद्य पदार्थों के चयन में कम से कम दस सेकंड खर्च करते हैं, इसलिए, वर्तमान में एक ऐसा लेबल लगाना बेहद जरूरी है, जो जल्दी और प्रभावी ढंग से उपभोक्ता को अस्वास्थ्यप्रद उत्पाद की पहचान करने की क्षमता की दिशा में ले जाए।

विभिन्न लेबलों के प्रभाव का वैश्विक साक्ष्य

लैटिन अमेरिकी के कई देशों, जैसे- चिली, मैक्सिको,¹⁶ उरुग्वे, ब्राजील, पेरू और इज़रायल ने फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग के रूप में चेतावनी लेबल के उपयोग को स्वीकार किया है, जिसने खपत और परिणामों में परिवर्तन दर्शाया है। मार्किटिंग पर प्रतिबंधों सहित इस नीति पैकेज की शुरुआत के बाद चिली में शर्करा पेय पदार्थों की खपत में लगभग 24 प्रतिशत की कमी आई।¹⁷ अधिकांश अध्ययनों से संकेत मिलता है कि खपत, खपत बढ़ने की तात्कालिक समस्या और शारीरिक वजन में वृद्धि का प्रभाव कम करने के सिलसिले में चेतावनी लेबल फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग का पसंदीदा तरीका है।¹⁸

'हाई-इन' वार्निंग लेबल्स सबसे प्रभावी पाए गए, जो पोषक तत्वों के चिंताजनक उच्च स्तरों के बारे में स्पष्ट, गैर-मात्रात्मक संदेश देते हैं और किसी मीठे फल की कथित स्वास्थ्यदायी क्षमता को कम करने में सबसे बड़ी प्रभावशालिता दर्शाई है।¹⁹ चेतावनी लेबल का लाभ यह है कि हेल्थ स्टार रेटिंग (एच.एस.आर.) के विपरीत, वे नमक, चीनी और वसा जैसे विशिष्ट हानिकारक घटकों की पहचान करने का काम करते हैं। अस्वास्थ्यप्रद खाद्य पदार्थों की खपत कम करने और इस प्रकार, गैर-संचारी रोगों को रोकने के लिए यह तरीका सबसे अधिक उपयोगी है। 2021 में प्रकाशित 100 से अधिक शोध अध्ययनों के एक मेटा-विश्लेषण ने संकेत दिया कि अस्वास्थ्यप्रद उत्पादों की खरीद को हतोत्साहित करने और कैलोरी एवं वसायुक्त की खरीद कम करने में पोषक तत्वों संबंधी चेतावनी लेबल्स ट्रेफिक लाइट्स और न्यूट्री-स्कोर लेबल से अधिक प्रभावशाली हैं।²⁰

"इसका कोई अनुभवजन्य साक्ष्य नहीं मिला कि ट्रेफिक-लाइट लेबलिंग के कार्यान्वयन ने इक्वाडोर में शीतल-पेय की खरीद की आदतों को बदल दिया, लेकिन इस बात के सबूत हैं कि इसने देश में कार्बोनेटेड पेय पदार्थों में चीनी की सामग्री को कम कर दिया।"²¹ इक्वाडोर के एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि ट्रेफिक-लाइट लेबलिंग के कार्यान्वयन के पहले वर्ष के दौरान कार्बोनेटेड शीतल पेय, विशेष रूप से चीनी के उच्च स्तर संबंधी खरीद को कम करने का अपेक्षित असर नहीं पड़ा।²² बिक्री पर हेल्थ स्टार रेटिंग (एच.एस.आर.) लेबल के प्रभावों का आकलन करने वाले पांच प्रयोगों के मेटा-विश्लेषण में कैलोरी या चीनी की खपत पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया गया और वसायुक्त या खरीदे गए नमक पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।²³ एक अन्य व्यवस्थित समीक्षा से पता चला कि एच.एस.आर. ने नियंत्रण की तुलना में खाद्य खरीद पर कोई प्रभाव नहीं दिखाया।²⁴ कनाडा में एक शॉपिंग ट्रायल में भाग लेने वाले जिन प्रतिभागियों ने "उच्च" पोषक तत्वों संबंधी चेतावनी संकेतों को देखा, उन्होंने फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग न देखने वाले प्रतिभागियों की तुलना में पेय पदार्थों की कम कैलोरी, चीनी, एवं वसा और कम कैलोरी एवं सोडियम वाले खाद्य पदार्थों को

खरीदा। ट्रेफिक लाइट्स, हेल्थ स्टार रेटिंग और पोषण ग्रेड (यानी, न्यूट्री-स्कोर) जैसे लेबल्स ने ज्यादा असर नहीं दिखाया।²⁵

यह संयुक्त दृष्टिकोण-परक बयान स्वास्थ्य, सार्वजनिक स्वास्थ्य, उपभोक्ताओं के अधिकारों, आहार, पोषण, महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य के विभिन्न मुद्दों से संबंधित अधोहस्ताक्षरी संगठनों द्वारा तैयार किया गया है। इसमें अल्ट्रा-प्रोसेस्ड अस्वास्थ्यप्रद खाद्य या पेय उत्पादों की खपत कम करने के लिए प्रमुख रणनीति यानी फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग पर जोर दिया गया है ताकि गैर-संचारी रोगों (एन.सी.डी.) में कमी लाई जा सके। इस बयान को वैज्ञानिक साक्ष्यों की व्यापक समीक्षा के बाद एक परामर्शी प्रक्रिया के जरिए तैयार किया गया है। यह बयान नीति निर्माताओं को सिफारिशें करता है।

हम अधोहस्ताक्षरी:

- ❖ इस तथ्य की सराहना करते हुए कि एफ.एस.एस.ए.आई. फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग की दिशा में काम कर रहा है और नीति आयोग फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग, उंचे टैक्स लगाने और अस्वास्थ्यप्रद खाद्य पदार्थों की खपत कम करने के लिए अस्वास्थ्यप्रद खाद्य पदार्थों की मार्केटिंग पर प्रतिबंध जैसे नीतिगत उपायों पर विचार कर रहा है;^{26, 27}
- ❖ यह जानते हुए कि अस्वास्थ्यप्रद खाद्य उत्पादों और पेय पदार्थों की खपत कम करके गैर-संचारी रोगों (एन.सी.डी.) को कम किया जा सकता है- विशेष रूप से बच्चों के लिए अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों की मार्केटिंग पर प्रतिबंध और खाद्य उत्पादों पर फ्रंट-ऑफ-पैक चेतावनी लेबल्स के जरिए;
- ❖ यह जानते हुए कि डब्ल्यू.एच.ओ. साउथ एशियन रीजन (WHO SEARO) ने विशेषज्ञों के साथ व्यापक परामर्श और भारत सहित अन्य देशों के अनुभवों के आधार पर खाद्य उत्पादों एवं पेय पदार्थों के वर्गीकरण के लिए व्यापक पोषण प्रोफाइल मॉडल्स तैयार किए हैं, चाहे वे नमक, चीनी या वसा जैसे किसी विशेष पोषक तत्व में उच्च स्तर वाले हों,²⁸ और यह कि डब्ल्यू.एच.ओ. ने खाद्य पदार्थों की मार्केटिंग के साथ-साथ फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग को तैयार करने में मार्गदर्शन प्रदान किया है;^{29, 30}
- ❖ इस बात से चिंतित हैं कि एफ.एस.एस.ए.आई. ने 'हेल्थ स्टार रेटिंग' (एच.एस.आर.) को शामिल करने का निर्णय किया है, जो एक सीमा है और डब्ल्यू.एच.ओ. की सिफारिश के अनुसार पोषक तत्व सामग्री से 2-3 गुना अधिक है तथा उसे सकारात्मक पोषक तत्वों को मसौदे के विनियमन में शामिल किया गया है;
- ❖ इस बात से चिंतित हैं कि एफ.एस.एस.ए.आई. ने अनिवार्य आधार पर इन उपायों को कार्यान्वित करने के लिए 4 से 5 वर्ष की असाधारण लंबी परिवर्तन अवधि (ट्रांजिशन पीरियड) प्रदान की है;
- ❖ इस बात से अवगत हैं कि 'भ्रामक मार्केटिंग' आक्रामक रूप से जारी है एवं बच्चों पर लक्षित है और खाद्य उद्योग चीनी के स्थान पर या कुछ फाइबर, फल या बादाम आदि के उपयोग के साथ 'गुड' के उपयोग से स्वास्थ्य के दावे करता है;
- ❖ इस बात से अवगत हैं कि खाद्य उद्योग फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग पर कब्जा जमा कर 'स्वास्थ्य दावों' का उपयोग करता है, जो संदेशों को भ्रमित करता है;
- ❖ यह महसूस करते हुए कि आक्रामक मार्केटिंग और फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग की अनुपस्थिति अस्वास्थ्यप्रद खाद्य/पेय उत्पादों की बढ़ती खपत में योगदान करती है;
- ❖ यह जानते हुए कि यह भारत सरकार की जिम्मेदारी है कि वह उपभोक्ताओं को इस बारे में चेतावनी दे कि कौन-सा खाद्य उत्पाद उपभोग करने के लिहाज़ से सुरक्षित है और कौन सा नहीं;
- ❖ यह देखते हुए कि एफ.एस.एस.ए.आई. द्वारा उठाए जा रहे कदम वैज्ञानिक साक्ष्य के अनुसार इच्छित उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद नहीं कर सकते हैं;

- ❖ इस बात पर जोर देते हुए कि वैज्ञानिक साक्ष्य, जो इस मामले में अस्वास्थ्यप्रद खाद्य उत्पादों पर चेतावनी लेबल का समर्थन करते हैं, को अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों की खपत और गैर-संचारी रोगों (एन.सी.डी.) को कम करने के लिए एक सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति के विकास का मार्गदर्शन करना चाहिए;
- ❖ चीनी, नमक और वसा में उच्च स्तर अस्वास्थ्यप्रद अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य उत्पादों की खपत को कम करने और गैर-संचारी रोगों (एन.सी.डी.) की कमी में योगदान करने के उद्देश्यों को पाने के लिए वैज्ञानिक साक्ष्य के आधार पर निम्नलिखित कार्यों की सिफारिश करते हैं:
 1. 'चिन्ह' में 'चेतावनी लेबल्स' या 'उच्च स्तर के रूप में' या 'अतिरिक्त' पोषक तत्वों से संबंधित लेबलिंग और प्रदर्शन के मसौदे के विनियमन में अनिवार्य होना चाहिए, न कि हेल्थ स्टार रेटिंग।
 2. नमक, चीनी और वसा की सीमा डब्ल्यू.एच.ओ. एस.ई.ए.आर.ओ. (WHO SEARO) के पोषक प्रोफाइल मॉडलिंग पर आधारित होनी चाहिए।
 3. 'सकारात्मक पोषक तत्व', जैसे- फल, सब्जी, मेवा और फाइबर' को लेबलिंग के लिए महत्वपूर्ण नहीं बनाया जाना चाहिए क्योंकि इनका उपयोग खाद्य उद्योग द्वारा मार्केटिंग के लिए स्वास्थ्य दावों के रूप में किया जाता है।
 4. बच्चों को लक्षित करने वाले अस्वास्थ्यप्रद खाद्य पदार्थों/पेय पदार्थों की मार्केटिंग को एक कानून के जरिए तुरंत रोका जाना चाहिए।
 5. इस तरह के सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दों पर निर्णय बिना किसी हितों के टकराव के परामर्श स्तर पर किया जाना चाहिए, खाद्य उद्योग के साथ बातचीत एक अलग मंच पर हो सकती है ताकि उनके सुझावों को सुनने और केंद्रीय चरण में सार्वजनिक स्वास्थ्य हित के साथ निर्णय लेने के लिए विशेषज्ञों के साथ चर्चा की जा सके।
 6. फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग पर अधिसूचना को अंतिम रूप देने के बाद उसके पालन के लिए खाद्य उद्योग को अधिकतम 18 महीने का समय दिया जा सकता है।
 7. सरकार को स्वास्थ्य प्रणालियों के जरिए इस बारे में एक व्यापक सार्वजनिक अभियान का नेतृत्व करना चाहिए कि कौन-से खाद्य पदार्थ खाने के लिहाज़ से सुरक्षित नहीं हैं और कौन से सुरक्षित हैं।

द्वारा तैयार किया:

न्यूट्रिशन एडवोकेसी इन पब्लिक इंटेरेस्ट (एन.ए.पी.आई.)

napiindia.in@gmail.com

समर्थन करने वाले संगठन:

1. अलायंस फोर सस्टेनेबल एंड हॉलिस्टिक एग्रीकल्चर (आशा)-किसान स्वराज नेटवर्क
2. एसोसिएशन ऑफ फिजिशियंस ऑफ इंडिया (मालवा ब्रांच)
3. ब्रेस्टफीडिंग प्रमोशन नेटवर्क ऑफ इंडिया (बी.पी.एन.आई.)
4. सेन्टर फोर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सी.एस.ई.)
5. कॉमनवेल्थ एसोसिएशन फोर हेल्थ एंड डिसएबिलिटी (सी.ओ.एम.एच.ए.डी.)
6. कन्जूमर वॉइस
7. कट्स इंटरनेशनल

8. एपिडेमियोलॉजी फाउंडेशन ऑफ इंडिया (ई.एफ.आई.)
9. इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स (आई.ए.पी.)
10. इंडियन एसोसिएशन ऑफ प्रिवेन्टिव एंड सोशल मेडिसिन (आई.ए.पी.एस.एम.)
11. इंडियन पब्लिक हेल्थ एसोसिएशन (आई.पी.एच.ए.)
12. इंडियन रुमेटोलॉजी एसोसिएशन (आई.आर.ए.)
13. इनिशिएटिव फोर हेल्थ एंड इक्विटी इन सोसायटी (आई.एच.ई.एस.)
14. किडनी वारियर्स फाउंडेशन
15. नॉन-कम्युनिकेबल डिजीजेज प्रिवेन्शन एकेडमी (एन.सी.डी.पी.ए.)
16. ऑबेसिटी सर्जरी सोसायटी ऑफ इंडिया (ओ.एस.एस.आई.)
17. पीडियाट्रिक एंड एडोलसेंट न्यूट्रिशन सोसायटी (पैन) - आई.ए.पी. न्यूट्रिशन चैप्टर
18. पीपल्स विजिलेंस कमेटी ऑन ह्यूमन राइट्स (पी.वी.सी.एच.आर.)
19. पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया (पी.एच.एफ.आई.)
20. पब्लिक हेल्थ रिसोर्स सोसाइटी (पी.एच.आर.एस.)
21. द महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बडोदा
22. फाउंडेशन फॉर पीपुल-सेंट्रिक हेल्थ सिस्टम्स (एफपीएचएस)
23. डायबिटीज इंडिया
24. इंडियन सोसाइटी ऑफ नेफ्रोलॉजी

.....

फूटनोट्स:

- ¹ Non-Communicable Disease and their risk factors, National Health Portal, <https://www.nhp.gov.in/healthyliving/ncd2019>
- ² Sachdev, H.S., Porwal, A., Sarna, A. et al. Intraindividual double-burden of anthropometric undernutrition and “metabolic obesity” in Indian children: a paradox that needs action. Eur J Clin Nutr 75, 1205–1217 (2021). <https://doi.org/10.1038/s41430-021-00916-3> accessed on 5 April 2022.
- ³ Egnell, M., Crosetto, P., d’Almeida, T. et al. Modelling the impact of different front-of-package nutrition labels on mortality from non-communicable chronic disease. Int J Behav Nutr Phys Act 16, 56 (2019). <https://doi.org/10.1186/s12966-019-0817-2> accessed on 5 April, 2022
- ⁴ Rico-Campà, A., Martínez-González, M. A., Alvarez-Alvarez, I., Mendonça, R. D., de la Fuente-Arrillaga, C., Gómez-Donoso, C., & Bes-Rastrollo, M. (2019). Association between consumption of ultra-processed foods and all cause mortality: SUN prospective cohort study. BMJ (Clinical research ed.), 365, 11949. <https://doi.org/10.1136/bmj.11949> accessed on 5 April, 2022
- ⁵ Taneri PE, Wehrli F, Roa Diaz ZM, Itodo OA, Salvador D, Raeisi-Dehkordi H, Bally L, Minder B, Kiefe-de Jong JC, Carmelli JL, Bano A, Glisic M, Muka T, Association Between Ultra-Processed Food Intake and All-Cause Mortality: A Systematic Review and Meta-Analysis, American Journal of Epidemiology, 2022;, kwac039, <https://doi.org/10.1093/aje/kwac039> accessed on 5 April, 2022
- ⁶ Ultra-processed Foods Need a Warning Label to Protect Consumers by World Food Policy Center, Duke Stanford, March 2022, <https://www.youtube.com/watch?v=z7WzF8JS8s>
- ⁷ Passport Packaged Food in India Euromonitor International January, <https://www.euromonitor.com/packaged-food-in-india/report> accessed on 5 April, 2022
- ⁸ Inclusion of ultra-processed foods within the regulatory framework A concept note for the Scientific Committee (SC) of the FSSAI by NAPi and BPNI, 14 Feb, 2022, <https://www.napiindia.in/docs/Concept-Note-for-regulating-UPF.pdf>
- ⁹ Champagne B, Arora M, ElSayed A, et al. World Heart Federation Policy Brief: Front-Of-Pack Labelling: Unhealthy Changes in the Global Food System. Glob Heart. 2020;15(1):70. Published 2020 Oct 16. doi: <https://globalheartjournal.com/articles/10.5334/gh.935/>

- ¹⁰ Rey-García J, Donat-Vargas C, Sandoval-Insauti H, Bayan-Bravo A, Moreno-Franco B, Banegas JR, Rodríguez-Artalejo F, Guallar-Castillón P. Ultra-Processed Food Consumption is Associated with Renal Function Decline in Older Adults: A Prospective Cohort Study. *Nutrients*. 2021; 13(2):428. <https://doi.org/10.3390/nu13020428>
- ¹¹ Elizabeth L, Machado P, Zinöcker M, Baker P, Lawrence M. Ultra-processed foods and health outcomes: a narrative review. *Nutrients*. 2020 Jul;12(7):1955. <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/32630022/>
- ¹² Debras C, Chazelas E, Srour B, Druésne-Pecollo N, Esseddik Y, et al. (2022) Artificial sweeteners and cancer risk: Results from the NutriNet-Santé population-based cohort study. *PLOS Medicine* 19(3): e1003950. <https://doi.org/10.1371/journal.pmed.1003950>
- ¹³ Gupta P, Shah D, Kumar P, Bedi N, Mittal HG, Mishra K, Khalil S, Elizabeth KE, Dalal R, Harish R, Kinjawadekar U. Indian Academy of Pediatrics guidelines on the fast and junk foods, sugar sweetened beverages, fruit juices, and energy drinks. *Indian Pediatrics*. 2019 Oct;56(10):849-63. <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/31441436/>, accessed on 5 April,2022
- ¹⁴ Vargas-Meza J, Jáuregui A, PachecoMiranda S, Contreras-Manzano A, Barquera S (2019). Front-of-pack nutritional labels: Understanding by low- and middle-income Mexican consumers. *PLoS ONE* 14(11): e0225268. <https://doi.org/10.1371/journal.pone.0225268> accessed on 5 April,2022
- ¹⁵ Front-of-package labeling - PAHO/WHO | Pan American Health Organization accessed on 2 February 2022. <https://www.paho.org/en/topics/front-package-labeling>
- ¹⁶ Basto-Abreu A, Torres-Alvarez R, Reyes-Sánchez F, González-Morales R, Canto-Osorio F, et al. (2020) Predicting obesity reduction after implementing warning labels in Mexico: A modeling study. *PLOS Medicine* 17(7): e1003221. <https://doi.org/10.1371/journal.pmed.1003221> accessed on 5 April, 2022
- ¹⁷ Taillie LS, Reyes M, Colchero MA, Popkin B, Corvalán C (2020) An evaluation of Chile’s Law of Food Labeling and Advertising on sugarsweetened beverage purchases from 2015 to 2017: A before-and-after study. *PLoS Med* 17(2): e1003015. <https://doi.org/10.1371/journal.pmed.1003015> accessed on 5 April, 2022
- ¹⁸ Scientific Evidence for Use of Warning Labels and Health Star Rating on Unhealthy-Ultra-processed Food Products by NAPI and BPNI, March 2022, <https://www.bpni.org/wp-content/uploads/2022/04/Sc-Evidence-for-warning-and-HSR-labels-on-unhealthy-food-30-March.pdf>
- ¹⁹ Jáuregui A, White CM, Vanderlee L, Hall MG, Contreras-Manzano A, Nieto C, Sacks G, Thrasher JF, Hammond D, Barquera S. Impact of front-of-pack labels on the perceived healthfulness of a sweetened fruit drink: a randomised experiment in five countries. *Public Health Nutrition*. 25(4), 1094-1104. <https://doi.org/10.1017/s1368980021004535> accessed on 5 April, 2022
- ²⁰ Song J, Brown MK, Tan M, MacGregor GA, Webster J, Campbell NR, Trieu K, Ni Mhurchu C, Cobb LK, He FJ. Impact of color-coded and warning nutrition labelling schemes: A systematic review and network meta-analysis. *PLoS medicine*. 2021 Oct 5;18(10):e1003765.
- ²¹ Peñaherrera V, Carpio C, Sandoval L, Sánchez M, Cabrera T, Guerrero P, Borja I. Efecto del etiquetado de semáforo en el contenido nutricional y el consumo de bebidas gaseosas en Ecuador [Effect of traffic-light labeling on nutritional content and on consumption of carbonated beverages in Ecuador]. *Rev Panam Salud Publica*. 2018 Dec 27;42:e177. Spanish. doi: 10.26633/RPSP.2018.177. PMID: 31093205; PMCID: PMC6398322.
- ²² Sandoval LA, Carpio CE, Sanchez-Plata M (2019) The effect of ‘Traffic-Light’ nutritional labelling in carbonated soft drink purchases in Ecuador. *PLOS ONE* 14(10): e0222866. <https://doi.org/10.1371/journal.pone.0222866> accessed on 5 April, 2022
- ²³ Croker H, Packer J, Russell SJ, Stansfield C, Viner RM. Front of pack nutritional labelling schemes: a systematic review and meta-analysis of recent evidence relating to objectively measured consumption and purchasing. *J Hum Nutr Diet*. 2020 Aug;33(4):518-537, <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/32364292/> accessed on 5 April, 2022
- ²⁴ An R, Shi Y, Shen J, Bullard T, Liu G, Yang Q, Chen N, Cao L. Effect of front-of-package nutrition labeling on food purchases: a systematic review. *Public Health*. 2021 Feb;191:59-67, <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/33517247/> accessed on 5 April, 2022
- ²⁵ Acton RB, Jones AC, Kirkpatrick SI, Roberto CA, Hammond D. Taxes and front-of-package labels improve the healthiness of beverage and snack purchases: a randomized experimental marketplace. *International Journal of Behavioral Nutrition and Physical Activity*. 2019 Dec;16(1):1-5. <https://ijbnpa.biomedcentral.com/articles/10.1186/s12966-019-0799-0>
- ²⁶ Minutes of FSSAI Stakeholders meeting 15th Feb. 2022. https://www.fssai.gov.in/upload/advisories/2022/02/6214b53d81294Minutes_FOPL_22_02_2022.pdf
- ²⁷ NitiAayog. Annual Report 2021-22, https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2022-02/Annual_Report_2021_2022_%28English%29_22022022.pdf accessed on 5 April 2022
- ²⁸ World Health Organization. WHO Nutrient Profile Model for South-East Asia Region. New Delhi: WHO, Regional Office for South-East Asia. 2017. <https://apps.who.int/iris/handle/10665/253459> accessed on 5 April, 2022
- ²⁹ World Health Organization. Food marketing exposure and power and their associations with food-related attitudes, beliefs, and behaviours: a narrative review. <https://apps.who.int/iris/rest/bitstreams/1408388/retrieve> accessed on 5 April, 2022
- ³⁰ World Health Organization. Implementing nutrition labelling policies: a review of contextual factors, 2021, <https://apps.who.int/iris/rest/bitstreams/1369774/retrieve>, accessed on 5 April, 2022

Nutrition Advocacy in Public Interest – India (NAPI)

BP-33, Pitampura, Delhi-110034

Tel: +91-11-42683059

Email: napiindia.in@gmail.com

Website: <http://www.napiindia.in/>